[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3213

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

सामाजिक मुद्दे एवं पर्यावरण

डॉ. आरती तिवारी
प्राचार्य
म.पु.रा.प.शासकीय कन्या महाविद्यालय देवास म.प्र.

परिचय

मनुष्य अपने पर्यावरण के साथ ही जन्म लेता है। और उसके बीच ही अपना जीवन यापन करता है। दूसरे शब्दों में सारा समाज पर्यावरण के बीच अर्थात प्रकृति की गोद में अपना जीवन यापन करता है। किन्तु इस जीवनयापन के लिए मनुष्य मुख्य रूप से पर्यावरण पर निर्भर करता है।

अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाए रखने एवं उसे और अधिक बेहतर बनाने के लिए मनुष्य निरंतर प्रयास करता है तथा इसके लिए वह प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता है।

इस प्रकार मनुष्य आदिम युग से आज तक निरंतर प्रकृतिक संसाधनों से अपना जीवन चलाता आया है। जिससे प्रकृति को कुछ नुकसान भी पहुंचा है। क्योंकि मनुष्य ने आधुनिकता की अंधीदौड में ऐसे रसायनों का प्रयोग किया है। जो प्रकृति के लिए अत्यंत नुकसानदेह है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मनुष्य अपना विकास बंद करदे। नहीं वह अपना विकास बिना प्रकृति या पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए भी जारी रख सकता है। बस आवश्यकता है तो इस बात की कि वह जो भी करे उससे पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे क्योंकि यदि वह नुकसान पर्यावरण को पहुंचा रहा है। तो परोक्ष रूप से मनुष्य अपना नुकसान स्वयं कर रहा है। वैश्विक तापवृद्धि एवं ओजोनक्षरण ग्रीनहाउस प्रभाव बढ़ना इत्यादि ऐसे उदाहरण हैं जो मानव द्वारा पर्यावरण को पहुंचाए जा रहे नुकसानों को प्रत्यक्ष रूप से बयान करते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास

आदिम मनुष्य पूर्णतः प्रकृति पर निभर था। उसे रसायनों एवं अन्य आधुनिक उपकरणों का ज्ञान नहीं था। जिससे वह पर्यावरण को क्षति नहीं पहुंचाता था। अपने भोजन एवं वस्त्र हेतु वह जंगली फलों एवं पत्रों से काम चलाता था। परन्तु कालांतर में जब मनुष्य ने कृषि करना प्रारंभ किया तब से उसने वनों की कटाई प्रारंभ कर दी और धीरे–धीरे जनसंख्या बढ़ने के साथ यह कार्य बढ़ता गया इसके अतिरिक्त मनुष्य पानी के लिए पूर्व में नदियों पर आश्रित था। किन्तु धीरे धीरे उसने कुंए खोदना शुरू कर दिया तथा जल का भी व्यय करने लगा।

आजकल के समाज में हाई राइज बिल्डिंगें बनती हैं जिससे कि पानी एवं प्रकाश के लिए अत्यधिक बिजली का खर्च करना पडता है जो कि अंततः हमारे पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुंचाता है। आजकल जनसंख्या बढ़ने के साथ ट्रैफिक बढ़ा है वाहनों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। इसके अलावा मनुष्य की रोजमर्रा की जिंदगी की आवश्यकताओं पूर्ति के लिए अनेक प्रकार के कारखाने खुले हैं। जिनकी चिमनियों के लिए वे सरकार द्वारा निर्धारित मापदण्डों का प्रयोग नहीं करते तथा खुला धुंआ यूंही छोड देते हैं। परिणापस्वरूप हमारे पर्यावरण के ओजोन मण्डल को भारी क्षति होती है।

जिससे सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर आकर हमें नुकसान पहुंचाती हैं।

शहरी समस्याएं –शुद्धजल –शुद्ध वायु –ई कचरा –शुद्ध बिजली

नगरीय जीवन की सबसे बड़ी समस्या जल की होती है। कहा भी है रहिमन पानी राखिए बिनपानी सब सून। आजकल नगरों में लगातार कांक्रीट के जंगल तैयार हो रहे हैं। जिसके निर्माण में अत्यधिक पानी की आवश्यकता होती है। इसके बाद इन ऊंची इमारतों में स्वच्छ पानी तथा उस पानी को ऊपरी मंजिलों तक पहुंचाने के लिए बड़ी मात्रा में बिजली की आवश्यकता होती है। इस बिजली को बनाने के लिए हमारे पर्यावरण पर ही दबाव डाला जाता है। चाहे वह पन बिजली हो अथवा थर्मल बिजली इस प्रकार नवीन एवं पुराने निकायों में जो कि सामाजिक विकास के लिए निर्मित किए गए हैं उनके रखरखाव तथा उनमें मानव जीवन को सुचारू रखने के लिए भी मनुष्य द्वारा पर्यावरण का नियमित दोहन किया जाता है।

उर्जा केनवीकरलीप स्त्रोत

पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण हैं उर्जा के नवीकरणीय स्त्रोत जिसे हमे दूसरे शब्दों में उर्जा के गैर परंपरागत स्त्रोत भी कहते है।

इस प्रकार के स्त्रोतों में वे स्त्रोत आते है जिनकों प्रयोग में लाने से पर्यावरण को हानि बिलकुल नहीं पहुंचती है ये निम्नानुसार है।

उर्जा के स्त्रोत

परंपरागत

कोयला, जीवाश्मिक ईंधन
लकड़ी, खनिज तेल

गैरपरंपरागत

सौर ऊर्जा पवन ऊर्जा नाभिकीय ऊर्जा

वर्षा जल की खेती

मनुष्य को अपना जीवन बनाए रखने एवं चलाने के लिए जल आवश्यक होता है। किन्तु पृथ्वी पर मीठा जल जो कि पीने योग्य होता है का सीमित ही भंडार है। अतः जल को अपनी आवश्यकता के लिए संरक्षित एवं सवंर्धित करना मनुष्य की मजबूरी है।

इसके लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प है – वर्षा जल की खेती इस खेती के लिए सामान्य रूप से दो पद्धतियां प्रयोग मे लाई जाती हैं।

पारंपरिक विधि – सामान्य रूप से तालाब एवं बावड़ियां बनाना।

नवीन विधि – घरों में ऐसे सोकपिट बनाना जिसमें कि वर्षा के जल का एकत्रीकरण हो तथा वह सीधे भूमि द्वारा शोषित कर लिया जावे।

इस प्रकार वर्षा जल की खेती से भूमिगत जल का स्तर बढ़ता है तथा मनुष्य को जल के अभाव का सामना नहीं करना पड़ता है।

आधुनिक समय में नए मकान एवं बिल्डिंग बनाने हेतु नक्शों को नगर निगम द्वारा रेन वाटर हारवेस्टिंग सिस्टम बनवाने के बाद ही स्वीकृति मिलती है।

इस प्रकार इसे कानूनी जामा भी पहनाया जा रहा है। जो आने वाले समय में और अधिक कड़ाई से लागू किया जाएगा।

शुद्ध वायु की प्राप्ति

वर्तमान समय में पर्यावरण में शुद्ध वायु की प्राप्ति जो कि मानव के स्वस्थ जीवन के लिए अपरिहार्य है। विकास हेतु मनुष्य द्वारा नए नए प्रयोग समयानुसार लिए जाते रहे है। जिनने पर्यावरण को अभूतपूर्व हानि पंहुचाई है। फैक्ट्रियाँ और वाहन द्वारा निकाले जाने वाले धुएं से वातावरण को अत्यधिक हानि होती है। इस हेतु मानक स्तर निर्धारित किए गए हैं।

भारत में इस हेतु पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू किया गया है तथा पर्यावरण संबंधी मामलों के लिए हरित न्यायाधिकरणों की स्थापना भी की गई है।
अभी हाल ही में दिल्ली में हरित न्यायाधिकरण ने 10 वर्ष पुरानी डीजल वाहन एवं 15 वर्ष से ज्यादा पुराने पेट्रोल वाहनों पर प्रतिबंध लगाया है। जिससे कि पर्यावरण प्रदूषण की मात्रा में युक्तियुक्त रूप से प्रतिबंध लग सके एवं उसमें सुधार लाया जा सके।

ग्लोबल वार्मिंग

यह भी एक अत्यंत ज्वलंत सामाजिक मुद्दा है जो पर्यावरण से जुडा है। इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि पृथ्वी का तापमान मनुष्य द्वारा किए गए एवं किए जा रहे प्रदूषण के कारण लगातार बढ़ रहा है। इससे ग्लेशियरों के पिघलने के साथ अन्य उपद्रव जो पारिस्थितिक तंत्र में हो रहे हैं उन्हें रोकना तथा वापस सामान्य स्तर पर लाना एक महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है। ग्लोबल वार्मिंग को रोका जाना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि यदि इस पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया तो ग्लेशियरों एवं ध्रुवों पर जमी बर्फ के पिघलने से जल प्रलय के आने की संभावना है और यदि इस प्रकार का जल प्रलय आता है तो समस्त मानव प्रजाति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा।

संरक्षण के आयाम

- भारी धातुओं पर निर्भरता कम, जीवाश्मिक ईंधन का कम प्रयोग
- कोयला नेचुरल गैस पर निर्भरता कम
- प्रकृति को कम नुकसान पहुँचाएं
- पर्यावरण एवं आर्थिक सहनशीलता
- Recharge for environment प्रकृति के नुकसान की भरपाई

भारी धातुओं टाइटेनियम आदि पर निर्भरता कम करें एयरोसोल आदि ऐसे प्रदूषकों का उपयोग कम करें जिससे पर्यावरण को क्षति पहुंचती है।
इसके साथ ही जीवाश्मिक ईंधन (खनिज तेल), कोयला आदि पृथ्वी पर उपलब्ध हैं। इसके बाद इनके निर्माण में बहुत अधिक समय लगता है। इसके बजाय गैर परंपरागत स्त्रोत जैसे बायोगैस सोर ऊर्जा तथा बायोडीजल आदि का प्रयोग अधिकाधिक करें इससे धन एवं पर्यावरण दोनों की बचत होती है।
प्रकृति एवं पर्यावरण को नुकसान कम से कम पहुँचाए कागज एवं अन्य प्राकृतिक वस्तुओं के अन्य विकल्पों का प्रयोग करें क्योंकि इससे धन, समय एवं पर्यावरण तीनों की रक्षा होगी।
इस प्रकार गैर परंपरागत ऊर्जा स्त्रोतों के प्रयोग से मनुष्य आसानी से पर्यावरण एवं आर्थिक सहनशीलता के मध्य संतुलन स्थापित कर सकता है। इससे उसे रोजमर्रा के कामों में अड़चन भी नहीं आएगी और आर्थिक रूप के साथ पर्यावरण को भी हानि नहीं होगी।
पर्यावरण संरक्षण हेतु पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाने के साथ ही पुराने हो चुके नुकसानों की भरपाई भी आवश्यक हैं ताकि मनुष्य को पर्यावरण से अधिक से अधिक सहयोग मिल सके सभी ऋतुएं समय पर अपना कार्य करें ताकि कृषि एवं अन्य कार्य सुचारू रूप से चल सके।
इसके लिए जल संरक्षण, वृक्षारोपण तथा जल संचिती आदि का निर्मलीकरण आवश्यक है। जो एक जनआंदोलन के रूप में चलाए जाने की नितांत आवश्यकता है।